प्रस्तावना

सरकारी कामकाज में राजभाषा हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए आवश्यक है कि सभी अधिकारी/कर्मचारी हिंदी भाषा का अपेक्षित स्तर का ज्ञान प्राप्त कर लें । इसी उद्देश्य से राजभाषा विभाग अन्य प्रयासों के साथ-साथ हिंदी के शिक्षण-प्रशिक्षण के कार्य को गंभीरता से कर रहा है । राजभाषा हिंदी को सूचना और प्रौद्योगिकी के माध्यम से और बढ़ावा देने के लिए राजभाषा विभाग ने सी-डैक, पुणे के सहयोग से लीला हिंदी प्रबोध, प्रवीण एवं प्राज्ञ नामक हिंदी भाषा शिक्षण पैकेज सी डी के रूप में उपलब्ध करा दिए हैं और अब ये पैकेज इंटरनेट पर भी उपलब्ध हैं । केंद्र सरकार के हिंदी भाषा सीखने के इच्छुक सभी अधिकारी/कर्मचारी इस सुविधा का निःशुल्क लाभ उठा रहे हैं ।

भाषा शिक्षण में पाठ्य-पुस्तकों का बहुत महत्व है इसलिए जहाँ एक और हम सूचना प्रौद्योगिकी से जुड़कर अत्याधुनिक तरीकों से हिंदी शिक्षण के कार्य को प्रारंभ कर चुके हैं वहीं यह भी आवश्यक है कि हम पाठ्य-पुस्तकों का स्तर ऊँचा करते रहें । केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान ने भी भाषाविदों, राजभाषा विभाग के वरिष्ठ अधिकारियों और अपने अधिकारियों/कर्मचारियों के सहयोग से इस दिशा में कार्य करना प्रारंभ कर दिया है । इस कड़ी की प्रथम प्रस्तुति नई प्रबोध पाठमाला का यह संस्करण है । इसी प्रकार प्रवीण तथा प्राज्ञ पाठमाला को भी शीघ्र संशोधित कर दिया जाएगा ।

मैं इस कार्य से जुड़े हुए सभी अधिकारियों और कर्मचारियों को धन्यवाद देना चाहूँगा जिन्होंने हिंदी भाषा के विविध आयामों के साथ-साथ वर्तमान वैश्वीकरण को ध्यान में रखते हुए प्रबोध पाठ्यक्रम की इस पाठमाला को उपयोगी और सम-सामयिक बनाने में विशेष योगदान दिया है ।

मुझे विश्वास है कि यह पुस्तक हिंदी सीखने और सिखाने वालों के लिए बहुत उपयोगी सिद्ध होगी ।

मदन लाल गुप्ता
संयुक्त सचिव, भारत सरकार

नई दिल्ली,
मई, 2005

आमुख

भारत के संविधान के अनुच्छेद 343 (1) के अनुसार देवनागरी लिपि में लिखी हिंदी संघ की राजभाषा है। तदनुसार यह आवश्यक है कि संघ के उन सभी अधिकारियों/कर्मचारियों को हिंदी भाषा का प्रशिक्षण दिया जाए जिन्हें हिंदी का ज्ञान प्राप्त नहीं है । इस उद्देश्य से भारत सरकार ने 1952 से अपने अधिकारियों/कर्मचारियों को हिंदी सिखाने का काम प्रारंभ किया । प्रशिक्षण के लिए प्रबोध, प्रवीण और प्राज्ञ नामक तीन प्रशिक्षण पाठ्यक्रम प्रारंभ किए गए जिनमें क्रमशः 5वीं, 8वीं, और 10वीं स्तर के बराबर हिंदी भाषा का ज्ञान कराया जाता है ।

प्रबोध पाठ्यक्रम के लिए समय-समय पर प्रशिक्षण सामग्री तैयार की जाती रही और 1982 से प्रबोध का वर्तमान पाठ्यक्रम लागू है । हालांकि समय-समय पर आवश्यकतानुसार इसमें मामूली परिवर्तन/परिवर्धन होते रहे हैं लेकिन अब इस पाठ्यक्रम को राजभाषा विभाग की आशाओं और अपेक्षाओं के अनुरूप केंद्रीय सरकार के कार्यालयों की जानकारी के लिए, देश की सांस्कृतिक तथा ज्ञान-विज्ञान की उपलब्धियों, सम-सामयिक विषयों, मानक वर्तनी आदि विषयों को जोड़कर संशोधित किया गया है । इस पाठ्यक्रम में यह भी प्रयास किया गया है कि भाषा ज्ञान के अर्जन के साथ-साथ शिक्षार्थियों को भाषा व्यवहार के अन्य क्षेत्रों से भी परिचित कराया जाए ।

इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए संस्थान के स्तर पर एक प्रारूप समिति का गठन किया गया जिसमें हिंदी प्राध्यापकों, सहायक निदेशकों, उप निदेशकों को शामिल किया गया । इस प्रारूप समिति द्वारा तैयार मसौदे को परिष्कृत रूप प्रोफेसर वी.रा.जगन्नाथन ने दिया । इसमें केंद्रीय हिंदी निदेशालय के पूर्व प्रधान संपादक डॉ. नरेद्र व्यास का भी सहयोग लिया गया ।

संस्थान के स्तर पर इसका मसौदा तैयार करने के बाद राजभाषा विभाग के संयुक्त सचिव, श्री एम.एल.गुप्ता की अध्यक्षता में एक विशेषज्ञ समिति का गठन किया गया जिसमें श्री बृजमोहन सिंह नेगी, निदेशक (नीति), श्री वी.के.श्रीवास्तव, निदेशक (तकनीकी), श्री अवतार सिंह गोदरे, निदेशक (कार्यान्वयन) और डॉ. विचार दास, निदेशक, केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो को शामिल किया गया, जिन्होंने इस पाठ्यक्रम को अंतिम रूप दिया ।

मैं राजभाषा विभाग के वरिष्ठ अधिकारियों, केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो के अधिकारियों और केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान के अधिकारियों की आभारी हूँ जिन्होंने इस प्रबोध पाठमाला को यह रूप देने में अपना पूरा-पूरा सहयोग दिया है । मैं विशेषतः राजभाषा विभाग के संयुक्त सचिव, श्री एम.एल.गुप्ता जी के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करती हूँ जिनके मार्गदर्शन में इस पाठ्यक्रम को अंतिम रूप दिया गया है । संपादन के लिए मैं डॉ. वी.रा.जगन्नाथन की विशेष रूप से आभारी हूँ ।

इस पुस्तक को अधिक उपयोगी और व्यावहारिक बनाने के लिए आपके सुझावों का स्वागत है ।

कुसुम वीर
निदेशक
केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान

नई दिल्ली
मई, 2005

भूमिका

प्रबोध का नया पाठ्यक्रम आपके समक्ष प्रस्तुत है । प्रबोध पाठ्यक्रम के इस नवीन संस्करण को चार भागों में बांटा गया है - वर्णमाला ज्ञान एवं अभ्यास, शिक्षण बिंदु पर आधारित पाठ, पूरक पाठ और परिशिष्ट ।

प्रबोध की पाठ्यक्रम सामग्री के प्रथम भाग में देवनागरी लिपि तथा लेखन अभ्यास से परिचय कराया गया है । हिंदी भाषा का ज्ञान अर्जित करने की दिशा में कदम बढ़ाने से पूर्व आपके लिए यह उचित रहेगा । आप पठन व लेखन का अभ्यास करें । जब आप देवनागरी लिपि से पूर्णतः परिचित हो जाते हैं तो आपके प्राध्यापक तुरंत पाठों का अभ्यास आरंभ करवा सकते हैं । आप पाठों के साथ-साथ लेखन अभ्यास जारी रख सकते हैं । लिपि ज्ञान अर्जित करने के साथ-साथ आपको उच्चारण का भी ध्यान रखना होगा । आपको शब्दों तथा वाक्यों के सटीक उच्चारण का ज्ञान पाठों में समाहित मौखिक अभ्यास द्वारा होगा । भाग-2 (पाठ सं. 26 से 48) इस संस्करण का सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा है । पाठों का क्रम इस प्रकार निश्चित किया गया है कि प्रशिक्षार्थी व्याकरणिक दृष्टि से उत्तरोत्तर भाषा का समुचित ज्ञान अर्जित करता चले । प्रत्येक पाठ एक नई संरचनात्मक पद्धति से आपका परिचय कराता है । तथापि सभी पाठों में भाषा की नैसर्गिकता को अक्षुण्ण बनाए रखा गया है । परिणामतः सभी पाठों में आपको अतिरिक्त वाक्य संरचनाएँ तथा स्वाभाविक अभिव्यक्तियाँ दृष्टिगोचर होंगी । पाठों की सामग्री इस तरह से रखी गई है कि आपको वास्तविक ज्ञान प्राप्त हो सके और इसके लिए प्रत्येक पाठ के मौखिक अभ्यास दिए गए हैं ।

आपके प्राध्यापक पाठों में दिए गए विस्तृत अभ्यासों तथा स्वाभाविक पठन प्रक्रिया द्वारा आपको पाठों की जानकारी देंगे । आप पाठों को बेहतर ढंग से समझ सकें इसके लिए प्राध्यापक शब्दों अथवा वाक्यांशों की सांस्कृतिक व व्याकरणिक पृष्ठभूमि से परिचय कराएँगे । प्रत्येक पाठ में आए कठिन शब्दों से भी आपका परिचय कराया जाएगा । पाठ समाप्ति के उपरांत पाठों में आई शब्द संरचना, पर्यायवाची, विलोमार्थक शब्दों, मुहावरों इत्यादि से वाक्य बनवाए जाएँगे । प्राध्यापक बाद में दो या तीन बार पाठ का पठन करेंगे ताकि प्रशिक्षार्थियों में भाषा संबंधी धाराप्रवाहिता का विकास हो सके ।

प्राध्यापक मौखिक अभ्यास इस तरह से करवाएँगे ताकि सभी प्रशिक्षार्थियों की उसमें सहभागिता बनी रहे। रूपांतरण अभ्यास में रेखांकित शब्दों या वाक्यांशों के बजाय प्राध्यापक, यथावश्यक इसी प्रकार के अन्य बहुत से शब्दों का प्रयोग कर सकते हैं जिससे वाक्यों की संरचना बदली जा सके । पुस्तक में दिए गए शब्द मात्र संकेतात्मक हैं । प्राध्यापक आवश्यकतानुसार शब्दों में फेरबदल कर सकते हैं । मौखिक अभ्यास भाग नीरस कार्यकलाप न बनकर एक अर्थपूर्ण संप्रेषण होना चाहिए । प्राध्यापक दो-दो प्रशिक्षार्थियों के समूह बनाएँगे और उन्हें पाठों में दिए गए सुझावानुसार वार्तालाप का अभ्यास कराएँगे । वार्तालाप का उद्देश्य प्रशिक्षार्थियों को धाराप्रवाह रूप से हिंदी में बोलना सिखाना है तथा अभिव्यक्ति को सहज बनाना है । प्राध्यापक प्रशिक्षार्थियों को मार्गदर्शन भी देंगे ताकि वे स्वयं मौखिक अभ्यास करें और वे कक्षा के बाद भी इसका अभ्यास जारी रख सकें ।

पाठ समाप्ति के उपरांत प्रशिक्षार्थी अभ्यास पुस्तिका में दी गई प्रश्नावली के अनुरूप अभ्यास कर सकते हैं प्रश्नावलियाँ शिक्षण का साधन हैं परीक्षण का माध्यम नहीं । अतः कक्षा में प्रश्नावलियों पर चर्चा की जा सकती है तथा प्राध्यापक बाद में इन्हें लिखवाएँगे । अभ्यास पुस्तिका में ‷ योग्यता-विस्तार ‷ शीर्षक के तहत स्वतंत्र अभिव्यक्ति के लिए अभ्यास दिए गए हैं इनका कक्षा में मौखिक रूप से अभ्यास किया जा सकता है । तत्पश्चात प्रशिक्षार्थियों को स्वयं वाक्य बनाने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए । यहाँ भी मुख्य बल भाषा के रचनात्मक प्रयोग पर होना चाहिए । प्रशिक्षार्थियों को भाषा संबंधी व्यापक जानकारी हो सके इसके लिए पुस्तक में तीन पूरक पाठ भी दिए गए हैं, जो केवल भाषा सीखने के अभ्यास के लिए हैं । परिशिष्ट में कुछ उपयोगी वाक्यांश/वाक्य दिए गए हैं । प्रशिक्षार्थी उनका अभ्यास और प्रयोग कर सकते हैं ।

हम सभी प्रशिक्षार्थियों के लिए सुखद अनुभव की कामना करते हैं ।

प्रो.वी.रा.जगन्नाथन

विषय सूची

			पृष्ठ संख्या
भाग -1			
	पाठ सं0	विषय	
		वर्णमाला ज्ञान एवं अभ्यास	
	1. से 25.	वर्णमाला एवं अभ्यास	3-42
भाग-2		**शिक्षण पाठ**	
	26.	कक्षा में	45-47
	27.	दिनचर्या	48-51
	28.	घर पर मुलाकात	52-58
	29.	जन्मदिन का निमंत्रण	59-61
	30.	खाने की मेज़ पर	62-65
	31.	दुकान में	66-69
	32.	यात्रा की तैयारी	70-74
	33.	डिस्पेंसरी में	75-78
	34.	क्रिकेट मैच	79-83
	35.	फोन पर	84-86
	36.	पिकनिक	87-90
	37.	साक्षात्कार	91-94
	38.	विवाह का निमंत्रण	95-99
	39.	पर्यटन	100-104
	40.	मुंबई की बारिश	105-108
	41.	अंतराष्ट्रीय व्यापार मेले में	109-112
	42.	पाँच प्रश्न	113-116
	43.	जयपुर की सैर	117-119
	44.	आतिथ्य	120-123
	45.	त्योहार	124-126
	46.	भारत देश	127-129
	47.	जीने की कला	130-133
	48.	पर्यावरण	134-136
भाग-3		**पूरक पाठ**	
	49.	बिहू पर्व	139
	50.	स्वदेशी और स्वभाषा के जनक गांधी जी	140-141
	51.	हिंदी का महत्व	142-144
भाग -4		**परिशिष्ट**	
	52.	परिशिष्ट-1	147
	53.	परिशिष्ट-2	148